ek/;fed fo|ky;ksa ds fo|kfFkZ;ksa dh cqf)] l`tukRedrk vkSj vkdka{kk Lrj ij muds f'k{kk cksMksZa ds izHkko dk v/;;u

डॉ. मनवीर सिंह
रीडर,
शिक्षक शिक्षा विभाग,
एन.एम.एस.एन. दास (पी.जी.) कॉलेज, बदायूँ

f- çLrkouk

शिक्षा मनुष्य जीवन के परिष्कार एवं विकास की प्रणाली है। जीवन के प्रत्येक अनुभव को शिक्षा कहा जा सकता है। वास्तव में समस्त मानव जीवन ही शिक्षा है और शिक्षा ही मानव जीवन है। शिक्षा का सम्बन्ध जितना व्यक्ति से है, उससे अधिक समाज से है। यदि शिक्षा न हो, तो समाज का जन्म ही न हो। मानव जीवन में जो कुछ भी अर्जित है, वह शिक्षा का ही परिणाम है।

बुद्धि, सृजनात्मकता तथा आकांक्षा स्तर यह तीनों सम्प्रत्यय व्यक्ति के व्यक्तित्व के महत्त्वपूर्ण आयाम हैं। बुद्धि शब्द से प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी रूप से जुड़ा है। सामान्यतः यह तथ्य ज्ञात है कि एक ही कक्षा में पढ़ने वाले सभी छात्र अपनी बुद्धि या क्षमता की दृष्टि से समान नहीं हुआ करते। यद्यपि किसी बालक की बुद्धि में वंशानुगत कारकों का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है तथापि भौतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवेष आदि का भी काफी प्रभाव बुद्धि पर पड़ता है। कतिपय शोधों में यह देखा गया है कि बच्चों को अच्छे परिवारों में रखने पर उनकी बुद्धि–लब्धि प्रायः बढ़ जाती है। मनुष्य अपनी बौद्धिक क्षमता के कारण ही समस्त प्राणियों में श्रेष्ठ माना जाता है। अपनी बौद्धिक और तार्किक क्षमता के द्वारा ही मानव अपने विचारों एवं कल्पनाओं को साकार कर सकता है तथा नवीन परिस्थितियों के साथ समायोजन करने में समर्थ होता है। व्यक्ति के अन्दर विद्यमान इस मौलिक योग्यता और भाक्ति को ही मनोवैज्ञानिकों ने सृजनात्मकता कहा है। सामान्यतः यह माना जाता रहा है कि सृजनात्मकता वंशानुगत होती है अथवा प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति में ही यह गुण पाया जाता है, परन्तु यह धारणा निर्मूल सिद्ध हो गई है अर्थात् सृजनात्मकता का गुण प्रत्येक बालक में अलग–अलग मात्रा में विद्यमान होता है। सृजन भाब्द का अभिप्राय नवीनता से होता है। जैसे– किसी नये पदार्थ का निर्माण, नया विचार आदि। सृजन शब्द से मौलिकता का बोध होता है। दूसरे शब्दों में जब कोई बालक या व्यक्ति परम्परागत रास्ते से हटकर किसी वस्तु की रचना करता है या कोई नया विचार देता है अथवा किसी गूढ़ समस्या का समाधान करता है, तो उसे सृजनशील कहा जाता है। सृजनात्मकता व्यक्ति के अन्दर विद्यमान रचनात्मक प्रवृत्ति की योग्यता है। सृजनात्मकता में मौलिकता और उपयोगिता दोनों ही गुणों का समावेश पाया जाता है। सार रूप में प्रत्येक बालक जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में अपनी सृजनशीलता का प्रदर्शन करता है। सृजनशील बालक अपने समाज तथा देश की अमूल्य धरोहर होते हैं। कोई व्यक्ति जो भी कार्य करता है, उसमें एक निश्चित लक्ष्य या प्रवीणता प्राप्त करना चाहता[2] है। लक्ष्य एवं आकांक्षायें व्यक्ति की क्षमताओं के अनुरूप, उसमें उच्च अथवा निम्न हो सकती हैं। किसी व्यक्ति के आकांक्षा स्तर की प्रकृति उसके व्यक्तित्व प्रारूपों को प्रतिबिम्बित करती है। किसी व्यक्ति की वह भावी निष्पत्ति, जिसे व्यक्ति अपने पूर्व निष्पत्ति के ज्ञान के आधार पर प्राप्त करना चाहता है, आकांक्षा स्तर है। व्यक्तित्व के इन तीन आयामों बुद्धि, सृजनात्मकता तथा आकांक्षा स्तर के सन्दर्भ में सी.बी.एस.ई. तथा यू.पी. बोर्ड दोनों शिक्षण संस्थानों के विद्यार्थियों के मध्य क्या कोई अन्तर हो सकता है ? यही जानने के लिये प्रस्तुत अनुसन्धान किया गया है।

,,- leL;k dFku

माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की बुद्धि, सृजनात्मकता और आकांक्षा स्तर पर उनके शिक्षा बोर्डों के प्रभाव का अध्ययन

इससे पूर्व भी अनुसंधान में प्रयुक्त चरों से सम्बन्धित कुछ अनुसंधान कार्य सम्पादित किये गये हैं, जिसमें बुद्धि सम्बन्धी अध्ययनों में 'ke'kknk eu ¼1988½] mTtoyk noh ¼1990½] xxl ,o proinh ¼1992½] tu ¼2007½] xlrk ¼2009½] 'kek] Bkdj] 'kek] eYgk=k ¼2011½] सृजनात्मकता सम्बन्धी अध्ययनों में flg] Hkno ¼1988½] 'kek ¼1990½] xkre ,o 'k'kh ¼1992½] dekj] ,l-,- ¼1992½] ,e- ny ,o egk'ork ¼2005½] feJk ¼2009½] JhokLro] xlrk ¼2011½] आकांक्षा स्तर सम्बन्धी अध्ययनों में ik.M; ¼1971½] ikBd ¼1985½] 'kek ¼1990½] tu ,o 'kkg ¼2000½] fe'r ¼2004½ प्रमुख हैं। इनमें से कोई भी अध्ययन माध्यमिक विद्यार्थियों की बुद्धि, सृजनात्मकता और आकांक्षा स्तर पर उनके शैक्षणिक बोर्डों के प्रभावशीलता के सन्दर्भ में सम्पादित नहीं किया गया है। यह अनुसंधान इसी उद्देश्य की प्रतिपूर्ति के अध्ययन का एक विनम्र प्रयास है।

...- leL;k dk ifjHkk"khdj.k

प्रस्तुत शोध अध्ययन का पारिभाषीकरण निम्नवत् है–

1. cf) %& बुद्धि एक ऐसी जन्मजात भाक्ति है, जिसे अर्जित नहीं किया जा सकता है, किन्तु शिक्षा द्वारा इसका विकास किया जा सकता है। बुद्धि कई मानसिक योग्यताओं का योग व अभिन्न अंग है। बुद्धि मुख्यतः व्यक्ति के सीखने, सामन्जस्य, स्वतन्त्र चिन्तन तथा समस्या समाधान आदि की योग्यता है। dkyolfud के अनुसार– *^^cf) dkb ,d 'kfDr ;k {kerk ;k ;kX;rk ugh g] tk lc ifjfLFkfr;k e leku :i l dk;l djrh g o vud fofHkUu ekufld ;kX;rkvk dk ;kx gA**
2. lftukRedrk % सृजनात्मकता से तात्पर्य व्यक्ति की सक्रियता तथा रचनात्मकता से है। gefot rFkk gefot ¼1973½ के अनुसार– *^^ifjorlu ykus] vfo"dkj djus rFkk rRok dk ml <x l j[kus dh {kerk tls o igys dHkh ugh j[k x;s gk rkfd mldk egRo ,o lUnjrk c< tk;] dk gh lftukRedrk dh lKk nh tk ldrh gA*** प्रस्तुत शोध–पत्र में सृजनात्मकता से तात्पर्य चिन्तन के उपरान्त इस प्रकार विचार प्रस्तुत करना है, जिसमें प्रवाह, नीयता व मौलिकता हो।
3. vkdk{kk Lrj % आकांक्षा स्तर का अर्थ है– व्यक्ति की इच्छा का स्तर। आकांक्षा किसी व्यक्ति की आकांक्षा का वह लक्ष्य है, जिसे पाने के लिये वह विभिन्न प्रकार से कार्य करता है तथा सदैव प्रयत्नशील रहता है। प्रस्तुत शोध में आकांक्षा स्तर का तात्पर्य शैक्षिक आकांक्षा स्तर से है।

†- v/;;u d mnns';

प्रस्तुत शोध के निम्नलिखित उद्देश्य हैं–

1. सी.बी.एस.ई. तथा यू.पी. बोर्ड के विद्यार्थियों की बुद्धि पर उनके शिक्षा बोर्डों के प्रभाव का अध्ययन करना।
2. सी.बी.एस.ई. तथा यू.पी. बोर्ड के बालक, बालिका, कला व विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की बुद्धि पर उनके शिक्षा बोर्डों के प्रभाव का अध्ययन करना।
3. सी.बी.एस.ई. तथा यू.पी. बोर्ड के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर उनक शैक्षिक बोर्डों के प्रभाव का अध्ययन करना।
4. सी.बी.एस.ई. तथा यू.पी. बोर्ड के बालक, बालिका, कला व विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर उनके शिक्षा बोर्डों के प्रभाव का अध्ययन करना।
5. सी.बी.एस.ई. तथा यू.पी. बोर्ड के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर पर उनके शैक्षिक बोर्डों के प्रभाव का अध्ययन करना।
6. सी.बी.एस.ई. तथा यू.पी. बोर्ड के बालक, बालिका, कला व विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर पर उनके शिक्षा बोर्डों के प्रभाव का अध्ययन करना।

‡- v/;;u dh ifjdYiuk;s

प्रस्तुत शोध की परिकल्पनायें निम्नवत् हैं–

1. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की बुद्धि पर उनके शिक्षा बोर्डों (सी.बी.एस.ई./यू.पी. बोर्ड) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

2. माध्यमिक स्तर के बालक विद्यार्थियों की बुद्धि पर उनके शिक्षा बोर्डों (सी.बी.एस.ई./यू.पी. बोर्ड) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।
3. माध्यमिक स्तर की बालिका विद्यार्थियों की बुद्धि पर उनके शिक्षा बोर्डों (सी.बी.एस.ई./यू.पी. बोर्ड) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।
4. माध्यमिक स्तर के कला वर्ग के विद्यार्थियों की बुद्धि पर उनके शिक्षा बोर्डों (सी.बी.एस.ई./यू.पी. बोर्ड) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।
5. माध्यमिक स्तर के विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की बुद्धि पर उनके शिक्षा बोर्डों (सी.बी.एस.ई./यू.पी. बोर्ड) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।
6. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर उनके शिक्षा बोर्डों (सी.बी.एस.ई./यू.पी. बोर्ड) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।
7. माध्यमिक स्तर के बालक विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर उनके शिक्षा बोर्डों (सी.बी.एस.ई./यू.पी. बोर्ड) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।
8. माध्यमिक स्तर की बालिका विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर उनके शिक्षा बोर्डों (सी.बी.एस.ई./यू.पी. बोर्ड) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।
9. माध्यमिक स्तर के कला वर्ग के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर उनके शिक्षा बोर्डों (सी.बी.एस.ई./यू.पी. बोर्ड) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।
10. माध्यमिक स्तर के विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर उनके शिक्षा बोर्डों (सी.बी.एस.ई./यू.पी. बोर्ड) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।
11. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की आकांक्षा स्तर पर उनके शिक्षा बोर्डों (सी.बी.एस.ई./यू.पी. बोर्ड) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।
12. माध्यमिक स्तर के बालक विद्यार्थियों की आकांक्षा स्तर पर उनके शिक्षा बोर्डों (सी.बी.एस.ई./यू.पी. बोर्ड) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।
13. माध्यमिक स्तर की बालिका विद्यार्थियों की आकांक्षा स्तर पर उनके शिक्षा बोर्डों (सी.बी.एस.ई./यू.पी. बोर्ड) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।
14. माध्यमिक स्तर के कला वर्ग के विद्यार्थियों की आकांक्षा स्तर पर उनके शिक्षा बोर्डों (सी.बी.एस.ई./यू.पी. बोर्ड) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।
15. माध्यमिक स्तर के विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की आकांक्षा स्तर पर उनके शिक्षा बोर्डों (सी.बी.एस.ई./यू.पी. बोर्ड) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

^- 'kk/k fof/k ,o izfØ;k

प्रस्तुत शोध अध्ययन विष्लेशणात्मक प्रकृति का सर्वेक्षण आधारित सूक्ष्म अनुसंधान है। इस शोध अध्ययन के अन्तर्गत शाहजहाँपुर जनपद में स्थित समस्त सी.बी.एस.ई. तथा माध्यमिक शिक्षा परिषद उ.प्र. से सम्बद्ध सभी माध्यमिक विद्यालयों को विषय–वस्तु बनाया गया है।

‰- lef"V ¼tula[;k½

प्रस्तुत शोध अध्ययन में विचाराधीन विषय–वस्तु के सम्पूर्ण समूह अर्थात् समश्टि से अभिप्राय शाहजहाँपुर जनपद के समस्त सी.बी.एस.ई. तथा यू.पी. बोर्ड से सम्बद्ध माध्यमिक विद्यालय हैं। इस शोध अध्ययन में अनुसंधित्सु ने शोध समस्या के अध्ययन हेतु शाहजहाँपुर जनपद के अन्तर्गत सी.बी.एस.ई. तथा माध्यमिक शिक्षा परिषद उ.प्र. के विद्यालयों में माध्यमिक स्तर पर कक्षा 11 में अध्ययनरत समस्त विद्यार्थियों को जनसंख्या के रूप में लिया है।

Š- U;kn'kZ

प्रस्तुत शोध अध्ययन में न्यादर्श का चयन द्विस्तरीय न्यादर्श विधि से किया गया है। प्रथम क्रमागत रूप से 50 प्रतिशत विद्यालयों तथा द्वितीय स्तर पर कक्षा 11 के 50 प्रतिशत विद्यार्थियों का न्यादर्श के रूप में चयन किया गया है।

‹- i;Dr midj.k

प्रस्तुत शोधकार्य में प्रदत्तों के एकत्रीकरण के लिये तीन उपकरणों (1) Verbal Intelligence Test (VIT) : R.K. Ojha and K. Ray Chaudhary, (2) Verbal Test of Creative Thinking (VCT) : Baqer Mehdi, (3) Educational Aspiration Scale (EAS) : Dr. V.P. Sharma and Dr. Anuradha Gupta का प्रयोग किया गया है।

fŒ- i;Dr lkf[;dh; rduhd

आंकड़ों के वि लेशण एवं निष्कर्श प्राप्त करने हेतु प्रतिशत, माध्य, प्रमाप विचलन, प्रमाप विभ्रम तथा परिकल्पना परीक्षण हेतु क्रान्तिक अनुपात का प्रयोग किया गया है।

ff- vkdMk dk fo'y"k.k ,o foopu

परीक्षण से प्राप्त आँकड़ों को वर्गीकृत करके प्रतिशत, माध्य, प्रमाप विचलन तथा प्रमाप विभ्रम की गणना कर क्रान्तिक अनुपात परीक्षण तथा टी–परीक्षण आदि सांख्यिकीय तकनीकों का प्रयोग करके प्रदत्तों का विष्लेशण एवं विवेचन कर निश्कर्श निकाले गये हैं।

¼1½ ek/;fed fo|ky;k d fo|kfFk;k d cf) Lrj ij f'k{kk ckMk d iHkko dk fo'y"k.k

यू.पी. बोर्ड तथा सी.बी.एस.ई. बोर्ड के विद्यार्थियों के बुद्धि स्तर पर शिक्षा बोर्डों के प्रभाव का विष्लेशण करने की दृष्टि से एकत्र आँकड़ों के वर्गीकरण और विष्लेशण से प्राप्त परिगणित मूल्यों को तालिका संख्या 1 में प्रदर्शित किया गया है।

rkfydk l[;k 1

ifjdYiuk l[;k	rqyuh; pj	vk/kkj	l[;k	ek/;	ieki fopyu	iekj foHkze	ifjxf.kr ØkfUrd vuikr	vUrj	ifjdYiuk
1	शैक्षणिक बोर्ड	सी.बी.एस.ई.	470	88.92	6.01	0.40	0.31	निरर्थक	स्वीकृत
		यू.पी. बोर्ड	840	89.04	7.87				
2	बालक	सी.बी.एस.ई.	305	89.19	6.17	0.51	0.31	निरर्थक	स्वीकृत
		यू.पी. बोर्ड	474	89.35	7.90				
3	बालिका	सी.बी.एस.ई.	165	88.40	6.79	0.67	0.36	निरर्थक	स्वीकृत
		यू.पी. बोर्ड	366	88.64	7.81				
4	कला वर्ग	सी.बी.एस.ई.	214	88.44	6.16	0.54	1.83	निरर्थक	स्वीकृत
		यू.पी. बोर्ड	531	89.43	7.86				
5	विज्ञान वर्ग	सी.बी.एस.ई.	256	89.13	6.58	0.607	1.55	निरर्थक	स्वीकृत
		यू.पी. बोर्ड	309	88.37	7.85				

0.05 सार्थकता स्तर पर निर्धारित मान 1.96 के सापेक्ष

परिकल्पनाओं के परीक्षण से प्राप्त निश्कर्शों का निर्वचन क्रमागत् रूप से निम्नवत् है–

1. सी.बी.एस.ई. तथा यू.पी. बोर्ड के माध्यमिक स्तर के कक्षा 11 के विद्यार्थियों की बुद्धि में तुलनात्मक दृष्टि से कोई अन्तर नहीं है, जो भी अन्तर दिखाई दे रहा है, वह निरर्थक है अर्थात् सी.बी.एस.ई. तथा यू.पी. बोर्ड के विद्यार्थियों की बुद्धि एक समान है।
2. सी.बी.एस.ई. तथा यू.पी. बोर्ड के माध्यमिक स्तर के कक्षा 11 के बालक विद्यार्थियों की बुद्धि में तुलनात्मक दृष्टि से कोई अन्तर नहीं है अर्थात् दोनों शैक्षणिक संस्थाओं के बालक विद्यार्थियों की बुद्धि पर इनका कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

3. सी.बी.एस.ई. तथा यू.पी. बोर्ड के माध्यमिक स्तर के कक्षा 11 की बालिका विद्यार्थियों की बुद्धि में उनके शिक्षा बोर्डों के आधार पर तुलनात्मक दृष्टि से कोई अन्तर नहीं है, जो भी अन्तर दिखाई दे रहा है, वह निरर्थक है। अतः कहा जा सकता है कि शिक्षा बोर्डों का बालिका विद्यार्थियों की बुद्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।
4. सी.बी.एस.ई. तथा यू.पी. बोर्ड के कला वर्ग के विद्यार्थियों की बुद्धि में उनके शिक्षा बोर्डों के कारण कोई अन्तर नहीं है।
5. दोनों ही प्रकार की शिक्षा संस्थाओं के विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की बुद्धि में तुलनात्मक दृष्टि से कोई अन्तर नहीं है।

¼2½ ek/;fed fo|ky;k d fo|kfFk;k d l`tukRedrk Lrj ij f'k{kk ckMk d iHkko dk fo'y"k.k

यू.पी. बोर्ड तथा सी.बी.एस.ई. बोर्ड के विद्यार्थियों के सृजनात्मकता स्तर पर शिक्षा बोर्डों के प्रभाव का विष्लेशण करने की दृष्टि से एकत्र आँकड़ों के वर्गीकरण और विष्लेशण से प्राप्त परिगणित मूल्यों को तालिका संख्या 2 में प्रदर्शित किया गया है।

rkfydk la[;k 2

ifjdYiuk la[;k	rqyuh; pj	vk/kkj	la[;k	ek/;	izeki fopyu	izeki foHkze	ifjxf.kr ØkfUrd vuqikr	vUrj	ifjdYiuk
1	भौक्षणिक बोर्ड	सी.बी.एस.ई.	470	47.50	10.51	0.56	6.39	सार्थक	अस्वीकृत
		यू.पी. बोर्ड	840	43.90	8.38				
2	बालक	सी.बी.एस.ई.	305	47.74	10.69	0.72	5.45	सार्थक	अस्वीकृत
		यू.पी. बोर्ड	474	43.82	8.30				
3	बालिका	सी.बी.एस.ई.	165	47.16	10.15	0.91	3.370	सार्थक	अस्वीकृत
		यू.पी. बोर्ड	366	44.01	8.48				
4	कला वर्ग	सी.बी.एस.ई.	214	46.72	10.08	0.78	3.427	सार्थक	अस्वीकृत
		यू.पी. बोर्ड	531	43.80	8.46				
5	विज्ञान वर्ग	सी.बी.एस.ई.	256	48.37	10.78	0.82	5.23	सार्थक	अस्वीकृत
		यू.पी. बोर्ड	309	44.08	8.24				

0.05 सार्थकता स्तर पर निर्धारित मान 1.96 के सापेक्ष

सृजनात्मकता पर शिक्षा बोर्डों की भिन्नता के प्रभाव का अध्ययन करने के लिये निर्मित परिकल्पनाओं के परीक्षण से प्राप्त निष्कर्श निम्नवत् है–

1. सी.बी.एस.ई. बोर्ड के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का सृजनात्मकता स्तर यू.पी. बोर्ड के विद्यार्थियों की तुलना में श्रेष्ठ है।
2. सी.बी.एस.ई. बोर्ड के बालकों की सृजनात्मकता यू.पी. बोर्ड के बालकों की तुलना में अधिक उच्च है।
3. सी.बी.एस.ई. बोर्ड की बालिका विद्यार्थियों का सृजनात्मक स्तर यू.पी. बोर्ड की बालिका विद्यार्थियों से श्रेश्ठ है क्योंकि इनके प्राप्तांकों का माध्य तुलनात्मक दृष्टि से अधिक है।
4. सी.बी.एस.ई. बोर्ड के कला वर्ग के विद्यार्थियों का सृजनात्मकता स्तर यू.पी. बोर्ड के कला वर्ग के विद्यार्थियों से श्रष्ठ है।
5. सी.बी.एस.ई. बोर्ड के विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों का सृजनात्मकता स्तर यू.पी. बोर्ड के विद्यार्थियों के सृजनात्मकता स्तर से उच्च है, अतः कहा जा सकता है कि माध्यमिक विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर सी. बी.एस.ई. बोर्ड का तुलनात्मक रूप से अच्छा प्रभाव पड़ता है।

¼3½ ek/;fed fo|ky;ksa ds fo|kfFkZ;ksa ds vkdka{kk Lrj ij f'k{kk cksMksZ ds izHkko dk fo"ys'k.k

यू.पी. बोर्ड तथा सी.बी.एस.ई. बोर्ड के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर पर शिक्षा बोर्डों के प्रभाव का विष्लेशण करने की दृष्टि से एकत्र आँकड़ों के वर्गीकरण और विष्लेशण से प्राप्त परिगणित मूल्यों को तालिका संख्या 3 में प्रदर्शित किया गया है।

rkfydk la[;k 3

ifjdYiuk la[;k	rqyuh; pj	vk/kkj	la[;k	ek/;	izeki fopyu	izeki foHkze	ifjxf.kr ØkfUrd vuqikr	vUrj	ifjdYiuk
1	भौक्षणिक बोर्ड	सी.बी.एस.ई.	470	44.61	13.80	0.76	6.14	सार्थक	अस्वीकृत
		यू.पी. बोर्ड	840	39.92	12.25				
2	बालक	सी.बी.एस.ई.	305	45.26	13.58	0.97	4.44	सार्थक	अस्वीकृत
		यू.पी. बोर्ड	474	40.93	12.75				
3	बालिका	सी.बी.एस.ई.	165	43.42	14.10	1.25	3.847	सार्थक	अस्वीकृत
		यू.पी. बोर्ड	366	38.61	11.45				
4	कला वर्ग	सी.बी.एस.ई.	214	43.22	13.37	1.05	3.11	सार्थक	अस्वीकृत
		यू.पी. बोर्ड	531	39.94	12.12				
5	विज्ञान वर्ग	सी.बी.एस.ई.	256	45.77	14.04	1.13	5.22	सार्थक	अस्वीकृत
		यू.पी. बोर्ड	309	39.83	12.48				

0.05 सार्थकता स्तर पर निर्धारित मान 1.96 के सापेक्ष

परिकल्पनाओं के परीक्षण से प्राप्त निश्कर्शों का निर्वचन क्रमागत् रूप से निम्नवत् है–

1. सी.बी.एस.ई. बोर्ड के विद्यार्थियों का आकांक्षा स्तर यू.पी. बोर्ड के विद्यार्थियों के शैक्षिक आकांक्षा स्तर से उच्च है।
2. सी.बी.एस.ई. बोर्ड का अधिक सकारात्मक प्रभाव बालक विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर पर पड़ता है।
3. सी.बी.एस.ई. बोर्ड की बालिका विद्यार्थियों का आकांक्षा स्तर यू.पी. बोर्ड की बालिका विद्यार्थियों क शैक्षिक आकांक्षा स्तर से उच्च है।
4. दोनों प्रकार के शिक्षा बोर्डों के कला वर्ग के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर पर प्रभाव के तुलनात्मक अध्ययन से यह निष्कर्श प्राप्त होता है कि सी.बी.एस.ई. बोर्ड के कला वर्ग के विद्यार्थियों का आकांक्षा स्तर यू.पी. बोर्ड के कला वर्ग के विद्यार्थियों के शैक्षिक आकांक्षा स्तर से उच्च है।
5. सी.बी.एस.ई. बोर्ड के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर की यू.पी. बोर्ड के विद्यार्थियों से तुलनीयता के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि विज्ञान वर्ग के विद्याार्थियों के आकांक्षा स्तर पर सी.बी.एस.ई. बोर्ड का अधिक सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

f„-l|>ko

अध्ययन से प्रकट समस्याओं को दूर करने के लिये निम्न उपाय किये जा सकते हैं–

1. माध्यमिक शिक्षा परिषद के विद्यालयों में पठन–पाठन वातावरण को सुधारने के लिये प्रभावी प्रयास किये जाने चाहिये, इसके लिये अनुश्रवण के कार्यक्रमों को बढ़ाना चाहिये।

2. माध्यमिक शिक्षा परिषद के शिक्षकों को नवीन शिक्षण तकनीकों तथा प्रयोगों की जानकारी व प्रशिक्षण दिया जाना चाहिये तथा ऐसी गतिविधियों को विद्यालयों में प्रोत्साहित करने के लिये प्रभावी प्रयास किये जाने चाहिये।
3. शिक्षकों से समय–समय पर ऐसी प्रश्नावलियाँ भी भरवायी जानी चाहिये, जिससे वे आत्म–विष्लेशण करने को बाध्य हों और उन्हें ह्रासित होती क्षमताओं को पुनः विकसित करने हेतु प्रेरित किया जा सके।
4. राज्य सरकार द्वारा समय–समय पर शिक्षकों की काउन्सलिंग तथा पारस्परिक समागम भी आयोजित किये जाने चाहिये।
5. सरकार को समय–समय पर इस प्रकार के सर्वेक्षण कराने चाहिये, जिनसे माध्यमिक शिक्षकों की समस्यायें प्रकाश में आ सकें और उन्हें दूर करने के लिये ठोस कदम उठाये जा सकें। ऐसा करने से शिक्षकों की पेशे के प्रति सन्तुष्टि तथा समायोजन क्षमता बढ़ेगी, जिसका सीधा प्रभाव बच्चों की सृजनात्मकता और आकांक्षा स्तर के सुधार पर दिखाई देगा।
6. विद्यालयों के पाठ्यक्रम को इस प्रकार से संरचित किया जाना चाहिये ताकि उनमें सृजनात्मक गतिविधियों की अधिकता हो सके।
7. माध्यमिक विद्यालयों में पुस्तकालयों की प्रभावी व्यवस्था के साथ खेल, संगीत और क्राफ्ट आदि की सुविधाओं को बढ़ाना चाहिये। इसके साथ ही साथ नियमित अध्यापन में इनको स्थान दिया जाना चाहिये।
8. यू.पी. बोर्ड की पुस्तकों के लेखन के समय और अधिक गम्भीरतापूर्वक विचार करते हुये पुस्तकों का निर्माण किया जाना चाहिये ताकि वे अधिक रोचक, सृजनात्मक तथा बच्चों के आकांक्षा स्तर की अभिवृद्धि में सहायक हों।
9. विद्यार्थियों को वर्तमान में उपलब्ध तथा भविश्य में निर्मित होने वाले शैक्षिक और व्यावसायिक अवसरों से भी परिचित कराया जाना चाहिये, जो उनके उच्च आकांक्षा स्तर के निर्माण में प्रभावी भूमिका निभाएगा।
10. शिक्षकों को विभाग द्वारा आयोजित दक्षतायें बढ़ाने वाले प्रशिक्षणों, कार्य शालाओं एवं सेमीनार आदि में अवश्य भेजना चाहिये।
11. शिक्षकों को प्रोत्साहित करने तथा उन्हें और अधिक कुशलतापूर्वक कार्य करने हेतु प्रेरित करने के लिये भाासन तथा समाज के द्वारा समय–समय पर पुरस्कार व सम्मान दिया जाना चाहिये।
12. माध्यमिक शिक्षकों का चयन करते समय उनकी शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति को भी आवश्यक रूप से जाना जाना चाहिये ताकि वे व्यक्ति ही अध्यापक बनें, जो वास्तव में ऐसा करना चाहते हैं।

lUnHk

1. त्सुनेसबुरो माकीगुची, सृजनशील जीवन और शिक्षा, नेशनल बुक ट्रस्ट ऑफ इण्डिया, नई दिल्ली, 2000
2. जैन रश्मि, कला समूह तथा विज्ञान समूह के ग्रामीण विद्यार्थियों के बौद्धिक स्तर तथा नैतिक मूल्यों का अध्ययन, प्रौढ़ शिक्षा, भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ, नई दिल्ली, वर्श 50, अंक 9–10, अप्रैल–मई 2007
3. मिश्रा भौलजा, बाल अपराधियों के रचनात्मक–चिन्तन एवं शैक्षिक अभिवृत्ति के विकास में बाल सुधार गृहों की भूमिका का अध्ययन, भारतीय आधुनिक शिक्षा, राश्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली, वर्श 30, अंक 1, जुलाई 2009
4. सुलेमान मुहम्मद, जैन नरेन्द्र प्रकाश, उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, मोतीलाल बनारसी दास, नई दिल्ली, 2009
5. श्रीवास्तव सुहासिनी, गुप्ता दीप्ति, सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन, भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, इण्डियन इन्स्टीट्यूट ऑफ एजूकेशनल रिसर्च, अंक 30, जनवरी–जून 2011
6. Anita Sharma, Kartar Singh Thakur, Poonam Sharma & Dalip Malhotra, Prediction of Different Streaus in Academic Achievement Through Verbal and Non-Verbal Intelligence Tests, Quoted in Journal of Community Guidance & Research, 2011, Vol. 28 No. 1, Neel Kamal Publications Pvt. Ltd.

7. Garg V.P. and Chaturvedi, Seema, Intelligence and Socio & Economic Status as Correlated of Academic Performance : Some Field Evidences, Indian Educational Review, Vol. 27(3) : 107-10, 1992
8. Gautam, Shashi, Development of Creative Thinking and Leadership among Navodaya Vidyalaya Students, Ph.D. Edu. Himanchal Pradesh Univ., Quoted in V Survey of Research in Edu., 1988-92, Vol-II
9. Gupta, Emotional Intelligence of Senior Secondary Students in Relation to their Re Ability, Quoted in Journal of Educational Studies, Association for Educational Studies, Vol. 7 No. 1, 2009
10. Jain S.P., Shah J.M., socio-Cultural Background and Educational & Aspiration, National Institute of Rural Development, Hydrabad, 2000
11. Kumar M.A., Sudhir, Socio Educational Correlates of Creativity among School Students in Arunachal, India Educational Review, Vol. 27(I) : 98-106, Quoted in V Survey of Research in Edu., 1988-92
12. Mist, S.K., A Study of Educational Aspiration in Context of Socio Economic Status & Achievement of Student of +2 Level, Unpublished Ph.D. Thesis, Uni. of Jammu & Kashmir, 2004
13. Pandey U.D. and Singh, R.P. (1971), The Effect of Sex and Culture on Achievement Motivation and Religious Practices, Journal. Psych. Res., 15
14. Sharma, I.P., A Comparative Study of the Personality Traits, Interests and Aspirations of High-Creative and Low Creative Physically Handicapped Students of Higher Secondary Schools, Ph.D., Edu., Rohilkhand Univ., 1990
15. Sharma, I.P., A Comparative Study of the Personality Traits, Interests and Aspirations of High-Creative and Low Creative Physically Handicapped Students of Higher Secondary Schools, Ph.D., Edu., Rohilkhand Univ., 1990
16. Singh, Bhoodev, Development of Tools for Identifying Creative Thinking Abilities Among Pre-School Children for Their Education and Proper Personality Development. Independent Study, Sultanpur, Kamla Nehru Institute. (ERLC Funded), Quoted in V Survey of Research in Edu., 1988-92, Vol-17